पाठ 16. सुभागी

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में समस्या के समाधान की क्षमता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान से सकारात्मक रूप से निपटने की क्षमता विकसित कर सकें। मुंशी प्रेमचंद के समय के समाज में सामंती युग की कुछ परंपराएँ पूरी तरह जीवित थीं, जो अंशत: आज भी शेष हैं। तुलसी महतो और उनकी पत्नी लक्ष्मी की दो संतानों के इर्द-गिर्द घूमती यह कहानी 'सुभागी' बिटिया के मज़बूत नारी चरित्र की प्रेरक शक्ति को उजागर करती है।

पाठ का सार

तुलसी महतो ने अपने बेटे रामू के जन्म लेने पर कर्ज़ लेकर खुशियाँ मनाईं और बिटिया के आने को अपने पूर्वजन्मों का पाप समझा। यह तथ्य हमारी कुंठित सोच पर करारी चोट है।
दूसरा प्रश्न पैदा हुआ सुभागी के बाल विवाह और बचपन में ही उसके विधवा हो जाने पर। सुभागी ने अपना घर पुन: बसाने के प्रस्ताव को नकार दिया। उसने अपने नालायक भाई के रहते अपने माता-पिता की उस समय की मर्यादा की सीमा में रहकर हर तरह से सेवा की और उनके देहांत के बाद कर्ज़ लेकर श्राद्ध-धर्म भी संपन्न कराया।
तीसरी स्थिति, जो बहुत महत्वपूर्ण है वह यह है कि माता-पिता के अंतिम संस्कार में कहानीकार ने 'रामू' बेटे को दूर ही रखा। चौथा चरण कहानी का यह है कि सुभागी ने विधवा जीवन से निकलकर सज्जनसिंह के आग्रह पर उनके बेटे से अंतर्जातीय विवाह करना स्वीकार किया। इस प्रकार, सुभागी अपने समय की मान्यताओं में साँस लेती और उन मान्यताओं में से कुछ को बड़े इत्मीनान से तोड़ती, नया संसार रचती है। यहाँ यह बताना उचित होगा कि यह कहानी जिस समाज व सामाजिक दशा को दर्शाती है, वह आज भी प्रासंगिक है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस पाठ के माध्यम से पारिवारिक दायित्वों व सामाजिक मूल्यों को उभारने की चेष्टा करें। पहले पाठ का सार बताएँ और मुंशी प्रेमचंद के ज़माने में लिखी इनकी रचना के बारे में बच्चों को बताएँ कि यह कहानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। समाज में घटित कुछ घटनाओं के उदाहरण बताए जा सकते हैं। 'बेटा-बेटी एक समान' का नारा क्यों दिया गया है, इस पर चर्चा करें। कहानी का वाचन करते समय महत्वपूर्ण मोड़ों पर रुककर बच्चों से उस संदर्भ में चर्चा करें और उनकी राय जानें। अंत में कहानी का मूल भाव व संदेश बच्चों से पूछें व उन्हें बताएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 79** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - समास की परिभाषा बच्चों को याद दिलाएँ। सामासिक पदों की पहचान कराएँ और उनके बीच के परसर्गों/योजकों पर विचार करने को कहें। इससे समास-भेद की पहचान करने में आसानी होगी।

- ❖ पाठ के संदर्भ में मुहावरों का अर्थ बताने को कहें। मुहावरों की उपयोगिता की चर्चा अवश्य करें।
- ❖ काल के भेदों व उपभेदों की परिभाषा बताते हुए उनकी पहचान का तरीका बताएँ।

क्रियाकलाप के लिए संकेत

- ❖ परिचर्चा में उन उदाहरणों को अवश्य शामिल करें जिनसे पता चलता हो कि बेटियों ने अपने परिवार, समाज व देश का नाम ऊँचा किया हो। इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, आदि के बारे में चर्चा की जा सकती है।
- ❖ संस्मरण लिखते समय बच्चों को तर्कशक्ति व कल्पना शक्ति का भरपूर इस्तेमाल करने का मौका दें। कक्षा में सर्वोत्तम संस्मरण लिखने वाले बच्चे से ही उसके द्वारा लिखे गए संस्मरण का वाचन करवाएँ।